



HCL-001-001502

Seat No. _____

B. A. (Sem. V) (CBCS) Examination

October – 2017

Hindi : Paper-V

(Compulsory) (Apsara Ka Shaap)

Faculty Code : 001

Subject Code : 001502

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours]

[Total Marks : 70

सूचना :

- (१) सभी प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तरवही में लिखिए ।
(२) सभी प्रश्नों के अंक सामने लिखे हैं ।

१ 'अप्सरा का शाप' उपन्यास का कथानक लिखते हुए उसकी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए । १४

अथवा

१ यशपाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक लेख लिखिए । १४

२ उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'अप्सरा का शाप' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए । १४

अथवा

२ "शकुंतला के चरित्र को लेखक ने बड़ी सटीकता से तादृश किया है ।" 'अप्सरा का शाप' उपन्यास के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए । १४

३ दुष्यंत का चरित्रांकन कीजिए । १४

अथवा

३ " 'अप्सरा का शाप' उपन्यास में इतिहास और कल्पना का सुभग समन्वय हुआ है ।" – विस्तार से समझाइए । १४

- ४ 'अप्सरा का शाप' उपन्यास में आलेखित समस्याओं पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए । १४

अथवा

- ४ 'अप्सरा का शाप' उपन्यास में निहित यशपाल के नारी-चिंतन को अभिव्यक्त कीजिए । १४

- ५ (अ) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : ७
(१) पर्यावरण सुरक्षा : आज का अहम सवाल
(२) मेरा प्रिय कवि

- (ब) हिन्दी में अनुवाद कीजिए : ७

नारी मानव समाजनु मूलत्वपूर्ण अंग छे. समाजना निर्माणां पुरुषनी अपेक्षां नारीनु योगदान अधिक छे. अनादिकाण्ठी भारतीय जन-मानसमां नारीनु आदरणीय स्थान रखुं छे. कन्या, पुत्री, गृहलक्ष्मी तथा माताना रूपमां नारीने सविशेष मूलत्व तेमज सन्मान आपवांमां आव्युं छे. ऋग्वेदमां तो तेने धरनी साम्राज्ञी कडी छे. सचराचर जगतना समस्त कोमल भावोनी अधिष्ठात्री नारी ज छे. वात्सल्य, सेवा, समर्पण, त्याग, बलिदान वगैरे गुणो नारीनो स्पर्श पाभीने स्वयं प्रकाशित छे. कोमलता, मधुरता तथा पवित्रता जेवा दिव्य अने उदात्त गुणो नारी थकी ज देदीप्यमान छे. समाजनी आधारभूत कडी, परिवारनी आधारशिला पण नारीने ज गणी शक्य.

अथवा

- (ब) गुजराती में अनुवाद कीजिए : ७

स्वामी विवेकानंद आधुनिक मानव के आदर्श प्रतिनिधि रहे हैं । उनके विचारों में वह तरोताजापन है, जो कभी भी अप्रासंगिक नहीं हो सकते । जवाहरलाल नेहरू कहते थे – “भूतकाल की संस्कृति पर खड़े और भारतीय परम्परा की विरासत के लिए मगरूर होने पर भी जीवन के प्रश्नों के प्रति अपनी दृष्टि में विवेकानंद आधुनिक थे ।” स्वामी जी का मानना था कि सब प्राणी एक समान हैं । जो भी व्यक्ति परमात्मा की सेवा का इच्छुक है, वह मनुष्य की और प्रथमतः दीनतम, तुच्छतम, हीनतम मनुष्य की सेवा करें । असृश्यता व अमानवीयता भारत देश की विशेषता नहीं है । उनके संदेश में निहित शाश्वत सत्य समग्र जगत् के लिए हमेशा उपयोगी रहे हैं; साथ ही साथ संप्रति भारत की अनेकानेक विकट परिस्थितियों में ये विचार अवश्यमेव प्रेरणादायी बन सकते हैं ।